व्याख्यान - 04

बी. ए. I

(हिन्दी प्रतिष्ठा (ऑनर्स))

प्रथम - पत्र

रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ

रीतिकालीन कवि राज दरबारी थे। रीतिकालीन साहित्य की सृष्टि सामन्तीय वातावरण में हुई। उस समय के राज दरबारी कवि से स्वान्तः सुखाय रचना की आशा नहीं की जा सकती है। प्रदर्शन - प्रवृत्ति - प्रधान युग का कवि भक्तिकालीन कवि में साहित्य - सम्बन्धी आदर्शों 'सन्तन को कहा सीकरी सों काम' - को सर्वथा छोड़कर स्वामी - मनस्तोष की छोटी सी तलैया की वासनात्मक अथवा संकीर्ण लहरियों में आकंठ निमग्न हो बेसुध बह गया। रीतिकालीन कवि ने अपनी समस्त शक्ति नारी - शरीर के रूप - चित्रण में लगा दी, उसकी अन्तरात्मा तक वह कभी नहीं जा सका। रीति कवि की इस प्रवृत्ति का प्रधान कारण उस समय का घुटनशील वातावरण है। विदेशी प्रभुसत्ता के सामने देशी रजवाड़े नतमस्तक होकर हतप्रभ हो चुके थे।

(1) श्रृंगारिकता :- रीतिकाल में श्रृंगारिकता की प्रवृत्ति सर्वत्र प्रचुरता के साथ दृष्टिगोचर होती है। भक्ति काव्य परम्परा से उन्हें अपने अनुकूल कुछ ऐसी सामग्री प्राप्त हो गयी थी जिससे श्रृंगारिक कविता लिखने के ~~लिए~~ लिए उस काल के कवि का द्वार खुल गया। उस समय का भौतिक वातावरण भी रीतिकालीन श्रृंगारिक मनोवृत्ति के सर्वथा अनुकूल था।

(2) आलंकारिकता - रीति काल की दूसरी प्रधान प्रवृत्ति है अलंकारिकता। प्रदर्शन, चमत्कार और रसिकता - प्रधान युग में इस प्रवृत्ति का होना स्वाभाविक भी था। वैसे तो साहित्य जनप्रचलित भाषा की अपेक्षा प्रभविष्णुता तथा ग्रहणशीलता की मात्रा अधिक होती है, किन्तु उक्ति चमत्कार के द्वारा पाठक और श्रोता के मन को आकृष्ट कर लेना इस युग के कवियों का

भक्ति के बारे में उसने सुकवितार्ई के प्रत्यापन की सोची थी। इस बात को नीचे की पंक्तियों में स्पष्ट संकेत है -

रीझि है सुकवि जो तो जानो कविताई,
न तो राधिका - सुमिरन को बहानो है।

नीति और भक्ति संबन्धी उक्तियाँ शतक ग्रन्थों में उपलब्ध हो जाती हैं।

(४) काव्य रूप :- रीतिकाल का कवि सर्वतः राजदरबारी वातावरण से घिरा हुआ था। रीति कवि के काव्य की सृष्टि का उद्देश्य उस युग के राजाओं और रईसों की रसिकता की वृत्ति को संतुष्ट करना था। ऐसी स्थिति में चमत्कार उत्पादनार्थ तथा वाहवाही - प्राप्ति के लिए मुक्तक काव्य शैली उसके अधिक अनुकूल पड़ी।

रीति काव्य में अधिकांशतः कवित्त, सवैया और दोहा जैसे छन्दों का प्रयोग हुआ है। यद्यपि बीच-बीच में छप्पय, बरवै, हरिपद आदि छन्दों का भी प्रयोग किया गया है।

(५) ब्रजभाषा की प्रधानता :- भारतीय साहित्य में साहित्य के क्षेत्र में संस्कृत भाषा के पश्चात ब्रजभाषा का स्थान आता है। ब्रजभाषा इस युग की प्रमुख साहित्यिक भाषा है। आलंकारिकता-प्रधान युग में भाषा की सजीवता और श्रृंगार के सम्बन्ध में कवि को विशेष सतर्कता और जागरूकता से काम लेना पड़ता है। एक तो ब्रजभाषा मध्यदेशीय भाषा थी, दूसरी यह प्रकृति से मधुर थी और साथ ही कोमल रसों की सुन्दर अभिव्यक्ति की इसमें अपार क्षमता थी।

(६) लक्षण ग्रन्थों का निर्माण :- रीतिकाल में रीतिमुक्त कवियों को छोड़कर प्रायः इस काल के सभी कवियों ने लक्षण ग्रन्थों का निर्माण किया है। रीतिकाल में कवि - कर्म और आचार्य कर्म एक साथ चलते रहे। रीतिबद्ध कवियों ने तो सीधे रूप में लक्षण और उदाहरण प्रस्तुत किया। कवि के लिए भावुकता का सा भवप्रवण हृदय अपेक्षित होता है। आचार्य-कर्म की सफलता के लिए प्रौढ़ मस्तिष्क और सर्वांग-पूर्ण संतुलित विवेचन - शक्ति की अपेक्षा हुआ करती है।

(७) वीररस की कविता — औरंगजेब के क्रूर आतंकमय

Scanned with CamScanner

और जहाँ तक ... के ...
छत्रसाल आदि वीर स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा के लिए औरंगजेब के साथ लोहा लेने को उठ खड़े हुए। अपने आश्रयदाताओं की धमनियों में अपने आततायी के विरुद्ध खड़े होकर सबल टक्कर लेने के लिए नवीन रक्त का संचार करने के लिए कवियों ने भी वीर रसात्मक कविताओं की रचना की।

(८) आलम्बन रूप में प्रकृति-चित्रण:- रीति काव्य में प्रकृति का चित्रण आलम्बन रूप में हुआ। प्रकृति का आश्रय रूप अथवा स्वतंत्र रूप में कम चित्रण हुआ है। प्रकृति का चित्रण नायक और नायिका की मानसिक दशा के अनुकूल ही किया गया है।

(९) अभिव्यंजना-पद्धति:- किसी भी युग के साहित्यकार की अभिव्यंजना पद्धति या प्रणाली उसकी वैयक्तिकता का प्रतीक होती है जो कि उसके साहित्य में सहज रूप में समाविष्ट हो जाती है।

(१०) नारी चित्रण:- रीतिकालीन कवियों ने जो नारी चित्रण किया है उस सम्बन्ध में आचार्य हजारी प्रसाद ने लिखा है - "यहाँ नारी कोई व्यक्ति या समाज के संगठन की इकाई नहीं है, बल्कि सब प्रकार की विशेषताओं के बन्धन से यथासम्भव मुक्त विलास का एक उपकरण मात्र है।

(११) पराश्रयिता की भावना:- रीतिकालीन कवि और समाज अपेक्षाकृत अधिक पराश्रित है। रीति-कवि एवं आचार्य का व्यक्तित्व, आजीविका और

संक्षेप में हम कह सकते है कि यह रीतिकाव्य शास्त्र की दृष्टि से चाहे इतना महत्वपूर्ण न हो परन्तु कवित्व की दृष्टि से बड़ा मनोरम है। इस काव्य का साहित्यिक और ऐतिहासिक मूल्य अक्षुण्ण है।

विनीता कुमारी
15-04-2020

विनीता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
डा० एल० के० वी० डी० कालेज ताजपुर।

Scanned with CamScanner